प्राण एवं जीव

हे व्यथित प्राण हे विकल प्राण, मत कर चिन्ता मत हो मलान।
इसको ही जीवन कहते हैं, मानव ही सब दुःख सहते हैं,
जो सबको एक समझते हैं, सब कहते हैं उसको महान।।
हे व्यथित प्राण हे विकल प्राण, मत कर चिन्ता मत हो मलान।।1।।

दुःख भी सुख की पतली रेखा, है जन्म मरण जीवन लेखा,
सत असत जग में जो देखा, मिल गया उसी को पूर्ण ज्ञान,
हे व्यथित प्राण हे विकल प्राण, मत कर चिन्ता मत हो मलान।।2।।

यह जग ही है दो का समास, यदि है विकास तो है विनाश,
मत हो आसी मत हो निराश, यदि है सन्ध्या तो है विहान,
हे व्यथित प्राण हे विकल प्राण, मत कर चिन्ता मत हो मलान।।3।।